तृतीय अध्याय

SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

तृतीय अध्याय
"समस्या" - स्वरूप विवेचन

प्रस्तावना :

३.१ समस्या का अर्थ

३.२ समस्या की परिभाषा

३.३ समस्या का स्वरूप, व्याप्ति

३.४ समस्याओंके प्रकार

३.५ समस्या और साहित्य का संबंध

निष्कर्ष

तृतीय अध्याय
"समस्या" - स्वरूप विवेचन।

प्रस्तावना :

भारतीय सामाजिक जीवन में विघटनकारी तत्वोंका प्रभाव बढता जा रहा हैं। जीवन का आज कोई भी क्षेत्र नजर नहीं आता जो विघटन की ओर नहीं बढरहा है। वर्तमान में हमारे सांस्कृतिक मूल्यों में इतनी तेजीसे गिरावट आई है कि, वैयक्तिक जीवन से सम्बन्धित अनेक समस्याएँ उठ खड़ी हुई हैं। आज अपराध, मद्यपान, जुआखोरी, वेश्यावृत्ति आदि की समस्याएँ बढती ही जा रही है। परिवार के क्षेत्र में भी आज स्थिती काफी बदल चुकी है, अनेक वैवाहिक और पारिवारिक समस्याएँ उठ खड़ी हुई है। "धर्म के नामपर पाखण्ड़ और अंध - विश्वासों में कोई कमी नहीं है। धर्म की सामाजिक नियंत्रण के साधन कें रूप में आज महत्ता घटती जा रही है। चरित्र और नैतिक मूल्योंका वर्तमान में अध:पतन हुआ हैं।"[१]

आज मानव जिस युग में वास्तव्य कर रहा है, उसे विज्ञान युग की अपेक्षा 'समस्या युग' कहना अधिक संगत होगा। विज्ञान के कारण मानव प्रगतिशील बन गया है, लेकिन प्रगतिशील जीवन के साथ - साथ अनेक जटिलताओं का जन्म हुआ है। मनुष्य जीवन से संबंधित हर कोई क्षेत्र 'समस्या' ने बाँध रखा है। अर्थात कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है, जहाँ व्यक्ति के सामने कोई समस्या न हो।

समस्याएँ चाहे अंतर्गत हो या बहिर्गत, मानसिक हो या भौतिक, वैयक्तिक हो या सामाजिक वह मनुष्य जीवन में बाधा ड़ालती है। समस्या के कारण मनुष्य के प्रगति में रूकावट पैदा होती है। समस्या के कारण आदमी के जीवन में बाधा आती है। यदि आदमी समस्या में उलझ गया तो जल्दी बाहर आने का रास्ता दिखाई नहीं देता। वह उसी गर्त में फँसता ही जाता है। आदिम युग में मनुष्य के जन्म से ही समस्याएँ निर्माण हुई हैं। तबसे आज आधुनिक युग तक आदमी की समस्या कम नहीं हुई। समस्या हर युग में होती है। सिर्फ स्थल, काल के साथ समस्या का स्वरूप बदल जाता है। समस्या से मुक्त होकर जीवन सुखी बनाने का

---

१) पुलिस और समाज - डॉ. स.स. अखिलेश - पृ. २३६

लगातार प्रयास करते आ रहे है। लेकिन समस्याएँ बढती ही जातीं है। आज समस्या मनुष्य जीवन का अभिन्न अंग बन गयी हैं। इसी समस्या को साहित्य ने भी अपना विषय बना लिया हैं।

आदमी का समाज सामाजिक समस्याओंका भंड़ार है। आदिम काल से आजके प्रगत काल में समस्या चलती आ रही है। इसी कारण समाज की जो समस्याएँ गंभीर रूपसे लोंगो पर प्रभाव ड़ालती है। उसी को लक्ष्य करके लेखक अपने साहित्य का विषय बनाकर लोंगो के सामने प्रस्तुत करके उसे कम करने का प्रयास करते हैं।

३.१ समस्या का अर्थ :

समस्या का अर्थ विभिन्न आचार्यों विद्वानोंने अलग - अलग लगाया है। संस्कृत आचार्योंने समस्या का केवल यही अर्थ लगाया है कि, ''समस्या' वह है जिसमें अपनी एवं दूसरे की रचना का संगठन अथवा समन्वय हुआ हो।''[१] हिंदी विश्वकोश में इस अर्थ के साथ साथ समस्या अर्थ ''संघटन, मिश्रण मिलने की क्रिया, कठिन अवसर या प्रसंग''[२] लिया है। तो मानक हिंदी अँग्रजी कोशकार ने ''उलझन, कठिन प्रश्न, पहेली, दुर्बोधबात, व्यूह, प्रहेलिका''[३] यह अर्थ लिया है। 'नालंदा विशाल शब्द सागर' के अनुसार समस्या का अर्थ है, ''वह उलझनवाली विचारणीय बात; जिसका निराकरण सहज में न हो सके। कठिन या विकट प्रसंग।''[४]

इस प्रकार निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि समस्या एक ऐसा कठिन प्रसंग है; जिसका निराकरण सहज में नहीं हो सकता। समस्या के लिए अँग्रजी में प्राँब्लेम यह पर्यायी शब्द है। लेकिन समस्या का अर्थ 'प्राँब्लेम' से अधिक व्यापक है; क्यों कि समस्या में अनेक प्रश्न होते हैं।

२.१ समस्या की परिभाषा :

किसी भी शब्द को समझने के लिए उसकी परिभाषा समझ लेनी पड़ती है। 'समस्या'

---

१) डॉ. विमल भास्कर - हिंदी में समस्या साहत्य - पृ. ९
२) हिंदी विश्वकोश - सं. नगेंद्रनाथ वसु - पृ. ६८
३) मानक अंग्रजी - हिंदी कोश - सं. सत्यप्रसाद बलभद्र मिश्र पृ. १०७
४) नालंदा विशाल शब्दसागर - सं. श्रीनवलजी - पृ. १४०

शब्द को कई विद्वानोंने परिभाषाएँ इसप्रकार हैं। परिभाषित करने का प्रयास किया है। उनमें से कुछ महत्त्वपूर्ण परिभाषाएँ इस प्रकार हैं।

१) **डॉ. विमल भास्कर :**

''समस्या'' आज एक कठिन उलझन के शिवाय कुछ नहीं। पर मानव इस उलझन की सुलझन में इस तरह उलझ गया है कि सुलझन उलझन के शिवाय कुछ भी नहीं आ रहा है। जीवन की जटिलताएँ, कठिनाइयाँ और समस्याएँ उसकी चित्तवृत्तियों के विकास के साथ-साथ निरंतर बढती चली जा रही हैं। मनुष्य इच्छाओं का दास है और इच्छाएँ सदैव अतृप्त रहती है। यही अतृप्ति कालांतर में जीवन में समस्याओं का जाल - सा फैला देती हैं। आज के युग में तो समस्याएँ जीवन के लिए इतनी बढ गयी हैं कि उनके कारण जीवन स्वयं एक समस्या हो गया हैं।''[१]

२) **इलाचंद्र जोशी :**

''आकाश के असीम विस्तार में टिमटिमाते तारों की तरह समस्याएँ भी अनगिनत और असंख्य है, उनकी यात्रा का कोई अंत नहीं हैं।''

३) **जैनेंद्रकुमार :**

''धर्म - अधर्म, पाप - पुण्य, न्याय - अन्याय इनको मिटाया जाए तो जीवन का अर्थ ही समाप्त हो जाएगा। द्वैत वेदना ओं में से ही शक्ति का उदय होता है। जिसमें पराक्रम और पुरूषार्थ फलित होता हैं। समस्या तक ही जीवन है। समस्या की वजह यत्न प्रयत्न है। द्वैत रहित स्थिती यति है तो द्वैत सहित स्थिती समस्या गति है, जीवन है।''

४) **हर्टन व लेस्ली :**

''ऐसी स्थिति जिसका समाज के बहुसंख्य लोगोंपर परिणाम होता है, और उसीके बारे में सब के द्वारा परिवर्तन लाने की इच्छा रहती है, या उस स्थितीपर कुछ उपाय ढूँढ लेना पड़ता है। समाज की उस अवस्था को सामाजिक समस्या कहते है।''[२]

---

१) डॉ. विमल भास्कर - हिंदी में समस्या साहित्य. पृ. ९०

२) समाजशास्त्र - अनंत वाईकर, सूर्यकांत घुगरे, उत्तम वाघमारे - पृ. ५३

इस प्रकार व्यक्ति के जीवन से संबंधित विषम परिस्थिती 'समस्या' है। समस्या मनुष्य जीवन के सन्मुख चुनौती के रूप में खड़ी होती है। व्यक्ति उसे संघर्ष करने तथा दूर करने के लिए प्रेरित रहता है। कम करने का हमेशा प्रयास करता है। एक कम हो तो दूसरी सामने खड़ी रहती है। आदमी का जीवन ही समस्या है।

३.३ समस्या का स्वरूप, व्याप्ति :

आदमी के जन्म से ही समस्या उसके साथ जुटी रहती है। वह उसका कभी पीछा नहीं छोड़ती। समाज में अनेक प्रकार की समस्याएँ नजर आती हैं। पहले समस्या शब्द साहित्यिक क्षेत्र से संबंधित था। लेकिन आज यह शब्द राजनीतीक, शैक्षिक, सामाजिक, धार्मिक सभी क्षेत्रों में अवगत होने लगा है। 'समस्या' एक क्रिया मात्र नहीं वह एक प्रक्रिया भी हैं। इसमें तीन सोपान होते है। इसकी तीन अवस्थाएँ होती है। यह एक विचारों की प्रक्रिया होती है, जिसमें संघर्ष की संभावना होती हैं। जो मनुष्य को कुछ करने के लिए प्ररित करती हैं। जिसमें मनुष्य का जीवन गतिशील रहता है। 'समस्या' ऐसी प्रक्रिया हैं, जिसमें द्वंद्वात्मक स्थिती है। हे गेल के द्वंद्वात्मक सिद्धांतों के अनुसार एक विचार आता है, उसी विचार के अनुसार अवस्थाएँ पैदा होती है। फिर दुसरा विचार आता है, वह पहले विचार से टक्कर लेता है। फिर इन दोनों विचारों के टक्कर में तीसरा विचार उत्पन्न होता है। इस द्वंद्वात्मक प्रक्रिया में जिस क्रम से हम तत्वबोधपर पहुँचते हैं वे तीन सोपान हैं – वाद, प्रतिकवाद, समवाद। इस अवतरण से यह स्पष्ट होता है कि समस्या एक क्रिया ही नहीं बल्कि प्रक्रिया भी है। इसमें तीसरे तत्व की उत्पत्ति ही समस्या है। याने परस्पर विरोधी परिस्थितियों में समस्या का उद्‌भव होता हैं।

कोईभी समाज हो, समाज में समस्याएँ होती ही है। इससे स्पष्ट होता है कि 'समस्या' सीधी, सरल प्रक्रिया न होकर वह उंलझनों तथा ग्रंथियों से युक्त होती है। इसमें व्यंग्य भी व्याप्त है, अभिप्रेत है। 'समस्या' मनुष्य के सामने चुनौती के रूप में खड़ी होती है। वह मनुष्य को विचार तथा चिंतन करने के लिए प्रेरित करती है। वह मनुष्य के मस्तिष्क को झकझोरकर उसे बेचैन करती है। इस तरह समस्या मनुष्य को सतत क्रियाशील एवं चिंतनशील बनाती हैं।

समस्या का क्षेत्र विशाल है। मनुष्य के जीवन में आरंभ से अंततक तथा जीवन के प्रत्येक क्षेत्रमें समस्या व्याप्त रहती है। अर्थात समस्या ने पूरे विश्व को व्याप्त किया है और मनुष्य हर समय, हर जगह निरंतर उससे संघर्ष कर रहा है।

३.४ समस्याओं के प्रकार :

समस्या ने कोई निश्चित क्षेत्र या सीमा अंकित नहीं की है। समस्या हर क्षेत्र में विराजमान है। वह सर्व व्याप्त है। फिर भी अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से समस्याओं को सामान्य रूपसे दो विभागों में विभाजित किया जा सकता है –

१) व्यक्तिगत या आंतरिक समस्या

२) बाह्य समस्या

१) व्यक्तिगत या आंतरिक समस्या :

आंतरिक या व्यक्तिगत समस्याएँ हमारे चिंतन, मनन और संस्कृति से तथा मनोविज्ञान से संबंधित होती है। इसे अध्यात्मिक समस्या भी कहा जाता है। ये समस्याएँ मानवी मूल्यों नैतिकता और धर्म संबंधी तत्वों के कारण निर्माण होती हैं।

२) बाह्य समस्या :

बाह्य समस्याएँ जीवन के कठोर सत्य पर आधारित होती है। ये समस्याएँ सामाजिक विषमता, अन्यायों एवं शोषण से उत्पन्न होती है। इसे भौतिक समस्या भी कहा जाता है। इनकी पृष्ठभूमि में एक स्वस्थ्य एवं सुंदर समाज निर्माण की कल्पना होती है। बाह्य या भौतिक समस्याओं को निम्न प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है –

१) पारिवारिक समस्या।

२) नारी समस्या।

३) राजनीतिक समस्या।

४) आर्थिक समस्या।

५) सामाजिक समस्या।

६) सांस्कृतिक समस्या।

७) धार्मिक समस्या।

३.५ समस्या और साहित्य का संबंध :

आदमी के जन्म से ही समस्या का निर्माण हुआ है। तबसे मानव आजतक उसे दूर करने के लिए संघर्ष कर रहा है। एक समस्या दूर होते ही नयी समस्या सामने आती है। अर्थात मनुष्य के जीवन में समस्या नहीं है। ऐसा एक भी मनुष्य नहीं है। और एक भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जहाँ समस्या नहीं है। अर्थात मनुष्य जीवन का कोई भी कोना ऐसा नहीं जहाँ आज समस्याओंका अस्तित्व नहीं। ''समस्या आज मनुष्य जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। इसलिए साहित्य में उसे स्थान मिलना स्वाभाविक ही है। साहित्य में लोकमंगल की भावना होती है। इसी कारण इन समस्याओं को दूर करके मानव जीवन सुखी बनाने के लिए साहित्यकारों ने समस्याओं को साहित्य में स्थान दिया है।''[१]

युग – परिवेश की दृष्टि से सन् १९३० से आजतक का समय भारतीय जीवन में संक्राति का काल था। देश के औद्योगिकरण से उत्पन्न मजदूर समाज एवं संगठित वर्ग के रूप में उभर चला था। उसकी नई चेतना से संपन्न किया मार्क्सवादी जीवन – दर्शन ने जो रूसी क्रांतिसे प्रेरणा प्राप्त कर देश के शिक्षित मध्यवर्ग तथा मजदुर वर्ग फैल रहा था। इसी को लक्ष्य बनाकर साहित्यिकोंने अपनी लेखनी का विषय बनाया।

उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी तथा कविता आदि साहित्य की कुछ ऐसी विधा है जिसके द्वारा समस्याओंको समाज के सामने प्रस्तुत किया जा सकता है। व्यक्ति को साहित्य पढ़कर व्यक्तिगत समस्या के साथ – साथ सामाजिक और राष्ट्रीय समस्याओंका भी परिचय होता हैं। अत:साहित्यकार द्वारा साहित्य के माध्यम से समस्याओंको परिचित कराने से ही समाज एवं राष्ट्र का उत्थान होता है। इसलिए साहित्य में समस्या होनी चाहिए। इस प्रकार समस्या का साहित्य से और साहित्य का समाज से अटूट संबंध है।

३.६ निष्कर्ष :

निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते है कि, आज का वर्तमान युग 'समस्या' का युग है। सांस्कृतिक मूल्यों में गिरावट आने के कारण वैयक्तिक, तथा सामाजिक जीवन में समस्याएँ पैदा हो रही हैं। समाज का एक भी क्षेत्र ऐसा नहीं जहाँ 'समस्या' न हो।

---

१) निराला कथा – साहित्य में युगीन समस्याएँ – डॉ. सरोज मार्कण्ड़ेय – पृ. २३५

१) 'समस्या' शब्द को 'कठिन' या 'विकटप्रसंग' के अर्थ में लिया गया है। अर्थात कठिण स्थिति जिसपर उपाय ढूँढना जरूरी लगता है। उसे 'समस्या' कहते हैं।

२) समस्याओंने आज तीव्रतर रूप में मानवी जीवन को जकड़ रखा है। त्रस्त किया है।

३) समस्या का स्वरूप विश्वव्याप्त है। आदमी के जन्म सेही समस्या उसके साथ जुटी रही है। वह उसका कभी पीछा नहीं छोड़ती।

४) समस्या सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक सभी क्षेत्रोंमें होने के कारण उसका स्वरूप भयावह है।

५) सामाजिक समस्याएँ ज्यादातर दिखाई देती है। मद्यपान, रिश्वतखोरी, चोरी, बलात्कार, नारी पर अत्याचार, गर्भपात, वेश्या व्यवसाय, बेरोजगारी आदि समस्याओंने पूरे समाज को जखड़ लिया है।

६) 'समस्या' कम करने केलिए उसपर उपाय ढूँढलेते हैं। लेकिन उपाय न खोजने के कारण समस्याएँ कम होने के बजाय ज्यादातर बढ़ती ही जाती है।

७) जैनेंद्रकुमार का समस्या के बारे में यह मत है कि, ''धर्म – अधर्म, पाप – पुण्य, न्याय – अन्याय इनको मिटायाजाए तो जीवन का अर्थ ही समाप्त हो जाएगा। द्वैत वेदनाओं में से ही शक्ति का उदय होता है। जिसमें पराक्रम और पुरुषार्थ फलित होता है। समस्या ही जीवन है।

अर्थात जीवन में समस्याएँही समस्या है। समस्यारहित आदमी आपको कहीं नजर नहीं आता।

८) समस्या का स्वरूप विश्वव्यापी होने के कारण समाज के आगे साहित्य के माध्यम से रखा जाता है। क्योंकि समाज के माध्यम से रखा जाता है। क्यों कि समाज और साहित्य का गहरा संबंध है। साहित्य के द्वारा समाज में व्याप्त समस्याओं को अवगत किया जा सकता है।

९) साहित्य में समाज का प्रतिबिंब होने के कारण उसमें समस्या का चित्रण अनिवार्य बन गया है। समस्या और साहित्य का अटुट संबंध हैं।

साहित्य के माध्यम से समस्याओंके समाधान ढूँढे जा सकते हैं।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.